16. भारतीय संस्कृति में गुरूशिष्य संबंध

स्वाध्याय

प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा केन्द्र कैसे थे ?

- प्राचीनकाल में भारतीय शिक्षाकेन्द्र एक प्रकार के आश्रम अथवा मंदिर जैसे थे |

जब रविन्द्रनाथ ठाकुर को नोबल पुरस्कार मिला तब बंगाली लोग कौन-सा राग अलापने लगे ?

- जब रविन्द्रनाथ ठाकुर को नोबल पुरस्कार मिला, तब बंगाली लोग 'अमादेर ढाकुर, अमादेर कठोर सपुत' राग अलापने लगे |

भगवान रामकृष्ण परमहंस बरसो तक योग्य शिक्षा पाने के लिए क्या करते थे ?

- भगवान रामकृष्ण परमहंस योग्य शिष्य पाने के लिए बरसो तक रो-रोकर भगवान से प्रार्थना करते थे |

भगवान ईसा का कौन-सा कथन सदा स्मरणीय है ?

- भगवान ईसा का यह कथन सदा स्मरणीय है – मेरे अनुयायी मुझसे कही अधिक महान है और उनकी जुतिया धोने लायक योग्यता भी मुझमें नई है |

गांधीजी कीन्हे अच्छे लगते है ?

- गांधीजी उन्हे अच्छे लगते है, जिनमें गांधीजी बनाने की क्षमता है और जो उनका अनुसरण करना चाहते है |

यूरोप के प्रभाव के कारण आज गुरु-शिष्य संबंधो में क्या अंतर आया है ?

- प्राचीन भारत में विधालय मंदिर के समान माने जाते थे | शिक्षा देना एक आध्यात्मिक कार्य था | पैसे देकर शिक्षा खरीदी नही जाती थी | शिष्य पुत्र से अधिक प्रिय होते थे | परंतु वर्तमान भारत में शिक्षा व्यावसायिक हो गई है | गुरु वेतनभोगी हो गए है | विधार्थी शुल्क देकर शिक्षा प्राप्त करते है | आज का शिष्य गुरु में परमेश्वर का रूप नही देखता | इस प्रकार यूरोप के प्रभाव के कारण आज गुरु-शिष्य संबंधो में जमीन-आसमान का अंतर आ गया है |

पुजारी की शक्ति मूर्ति में कैसे विकसित होने लगी ?

- पत्थर की मूर्ति तो जड होती है । उसमें चेतना डालने का काम पुजारी करता है । मूर्ति की पूजा करने का अर्थ ही उसे चेतनवंत बनाता है । पूजा करते समय पूजारी की भावना में जितनी उत्कटता होगी, मूर्ति उतनी ही प्रभावशाली होगी । पुजारी की भावपूजा की शक्ति से ही धीरे-धीरे मूर्ति में शक्ति विकसित होने लगती है ।

विवेकानंद और रविन्द्रनाथ ठाकुर को इस देश में अधिक महत्व कब मिला ?

- विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे | आरंभ में उन्हे भारत में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ नही था | वे जब अमेरिका गए और उन्होने वहा नाम कामाया, तब भारतवासियों ने उन्हे सम्मान देना शुरू किया इसी प्रकार रविन्द्रनाथ ठाकुर को यहा कोई नही जानता था | उन्हे जब नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया तब बंगालवासियों ने उनकी प्रतिभा पहचानी | वे बंगाल के नही, सारे देश के ली गौरव बन गए | इस प्रकार विदेशो में सम्मानीत होने पर ही विवेकानंद और रवीन्द्रनाथ ठाकुर को इस देश में महत्व मिला |

आशय स्पष्ट कीजिए :

सम्मान पानेवालो से सम्मान देनेवाले महान होते है ।

- सम्मान पानेवाले अपने किसी विशेष गुण के कारण सम्मानित होते है । जैसे हीरे के गुण की पहचान की जाए तो ही वह बहूमूल्य है । यदि पहचाना न जाए तो वह भी एक पत्थर ही है । उसी तरह सम्मान पानेवालो की विशेषता को परख लिया जाए, पहचान लिया जाए तो ही वे सम्माननीय है, नही तो वे साधारण मनुष्य ही समझे जाएँगे । उनकी विशेषता को समझकर उन्हे प्रकाश में लानेवाले लोग ही उनका सम्मान करते है । इसलिए सम्मान पानेवाले से भी सम्मान देनेवाले अधिक महान होते है ।
-

आशय स्पष्ट कीजिए :

"जो गुरु से मार खाते है, उनका भविष्य उज्ज्वल होगा ही।"

- पढाइ के लिए विधार्थीका ध्यान कही पढाइ में होना जरूरी है । गुरू पढा रहा है और है विधार्थी का ध्यान कही और है तो वह जो पढाया जा रहा है उसे ग्रहण नही कर सकता । गुरु के मार से विधार्थी का ध्यान पढाइ में लग जाता है। इस तरह जब वह एकाग्र होकर पढता है तो उसे सचमुच ज्ञानप्राप्ति होती है, उसकी बुद्धि का विकास होता है और उसमें योग्यता आती है । ऐसा होने पर ही उसका भविष्य उज्ज्वल होने में संदेह नही रहता ।

विरुद्रथी शब्द लिखिए :

1 रोगी x निरोगी

2 असहाय x सहाय

3 वृद्ध x युवा